

गा१५२१ अर्क१२ भक्तो लक्ष्मणदय

अभुक्त शिष्टां पुत्रिअ मपुत्र हचिस्वा विअजो मपुत्र मधुश पुत्रे

गी'कायापूजा'सिताम्वन'४॥ जनै'वचन'४॥ ॥ उपप्लवसुभा'गा'४॥ सुना'त्रि'४॥ सिंहिकासू
र'४॥ ना'४॥ ॥ कतुर्व'सुभा'४॥ धूम्रव'४॥ शिखी'तथा'॥ कतु'४॥ ॥ धृतगुह्याना
म'॥ ॥ अ'विनी'गुन'ग'वाजी'गुन'४॥ धृत'४॥ धात'का'१॥ हया'वा'का'द'४॥ स्म'वि
नि'ग'य'॥ अ'विनी'॥ ॥ य'मान'क'४॥ क'ता'न'४॥ याम्य'४॥ प्र'प'ति'स्मृत'४॥ र'न'पी'य'म
ला'४॥ मा'सा'द'पि'प'ति'सु'॥ र'न'पी'॥ ॥ व'क'ला'द'ह'ना'व'कि'४॥ या'व'का'१॥ गि'क'ता
४॥ क'त'गु'ह'ना'धि'ष्ठा'तु'ला'हि'ता'ंग'४॥ क'र्त्तिका'॥ क'र्त्तिका'॥ ॥ ना'हि'पी'प'म'या'नि
४॥ व'क्रा'क'म'ल'सी'र'व'४॥ पि'ता'म'हा'१॥ क'जा'४॥ ना'वि'लि'वि'ष्ट'प्र'जा'प'ति'४॥ च'तु'र्म्'ख'४॥ गु
र्व'कु'४॥ मु'ष्टा'प'मा'स'ना'वि'धि'४॥ आ'त्म'गु'४॥ प'न'म'ष्टी'च'सु'न'४॥ म'ना'ग्र'ज'४॥ ना'हि

द. क
२

ली ॥ ॥ सोम्यामृग छिना ॥ साभा निष्मना ॥ एत निष्मपति ॥ मृगक ॥ जीत न सिधु
नाली ॥ एत न जीपति ॥ वन्दु माहिम न छिमेव छि छिती ॥ उमदी धिति ॥ ॐ नू निष्मक नयु
न्यु छ जीव न हि छी धव ॥ मृग छि न ॥ ॥ आर्द्रा नो द्रं छिव ॥ ॐ ली ॥ क नयु न्यु ॥ एत न
॥ साम ह्यु म्बका र्ग्वं छु ॥ एत गिति न पति ॥ महा दवा महं ॥ पार्वती पति
नी ॥ वन ॥ श्रीक ॥ नील क ० ॥ एत पति छु स वाहन ॥ आर्द्रा ॥ ॥ अदिति द्दव माता
व. पुनर्वसु ॥ स्मृता व ॥ ॥ पुनर्वसु ॥ ॥ गुन ॥ पूष्य ॥ सुन ॥ एत ॥ दव मन्त्री कवि ॥ स्मृ न
॥ वृहस्पति ॥ सुना ॥ का वागी ॥ सुनि न जिना ॥ वाक्क तिसु न पूष्य ॥ पिद वय मिद
॥ अर्जित ॥ पूष्य ॥ ॥ अ ॥ एत ॥ उज्ज ॥ सय्य ॥ दन्द ॥ का विल ॥ य ॥ वक्र ॥ वाह ॥ नीना

नाम
२

(गम) तु ऊँ गम ४ रु नि न स थ ॥ उ न (गम) २ हि वि षा गि षु वि ष ध न २ थ प न्न ग ॥ २५ (गम) ॥
पि रु दे वा म घा नि र्य ॥ म घा ॥ ॥ रु ग म र व ४ पू र्व रु लु षी उप रु लु म द स ४ रु लु ना थानि ४ (गम) ४
ख प्र द ४ ॥ ग र ह नि र्म म ल द्वा ना ग र ह प षा स्मृ ता वू (धे) ॥ पू र्व रु लु षी ॥ ॥ रु लु त्वे व म न्य द पू र्थ
म र्थ्य मा रु त रु लु षी ॥ उ रु त रु लु षी ॥ ॥ ह रु लु क ४ स वि ता स र्थ ४ प्र च षु नू वि नू क ग ४ ॥ त न
लि रु प ना रु नू दि न ना (धे) दि न भू व न ४ ॥ दि वा क न ४ ख नी शु षु मारु रु मि हि ना न वि ४ ॥ स फ
स पि ४ स्मृ ता रु लु न् आ दि श्या वृ धू उ व च ॥ नि षा नू का नि षा नि ४ स्या दि न (गम) २ रु वि का ष क
४ ॥ रु लु ॥ ॥ त्व षा वि षा च ॥ वि षा ॥ ॥ वा ना र व स्वा ति ष प व न हे व व री ॥ समी न ४ ४ स च स ना वा
यू र्मा त लि ष स दा ग ति ४ ॥ स्वा ति ॥ ॥ रु द्रा गि षु पि षा का गि वि षा र व च नि ग य ता ॥ वि षा र वा ॥

द. क
३

अननारु स्मृता मेण विष्णुः ४ स्यादङ्गः ४ स्मृतः ४ ॥ अननारु ॥ ॥ अष्टासूनाधिपः ४ अङ्गः ४ पू
नूकताः ४ मनाधिपः ४ ॥ ब्रूदः ४ पूनन्दनः ४ प्राकः ४ सहस्राङ्गः ४ स्थवासवः ४ ॥ अष्टः ॥ ॥ नाकसाने
जृतामूला ॥ मूलः ॥ ॥ पूर्वाष्टाङ्गलाङ्गयः ४ ॥ पूर्वाष्टाङ्गः ॥ ॥ विष्णुः ४ अष्टाङ्गनाष्टाङ्ग
विष्णुदवः ४ सकथ्यतः ॥ उरुनाष्टाङ्गः ॥ ॥ अष्टाङ्गमाधवाविष्णुनच्युतः ४ कणवाहनिः ४ ॥ श्री
धनादानवानिष्णुः ॥ अष्टाङ्गः ॥ ॥ धनष्टाचधनवसूः ४ ॥ धनष्टः ॥ ॥ वनष्टाचधनवसूः ४ ॥ वनष्टः ॥ ॥
तस्मिन्नाम्बुनाष्टवतः ॥ अष्टाङ्गः ॥ ॥ अङ्गकपादः ४ स्मृतानिर्णयः ४ पूर्वराष्ट्रपदावुः ४ ॥ पूर्व
रुद्रः ॥ ॥ स्याच्चाष्टाङ्गनेष्टाङ्गपदा. अष्टाङ्गध्वजकथ्यतः ॥ उरुनरुद्रः ॥ ॥ अङ्गनरुद्रः ४ ॥ श्रीदिननाथाय ॥ ॥
आचरितचिन्तामचः ॥ नवनी ॥ ॥ अङ्गिनकृत्तनामसमाप्तः ॥ ॥ अङ्गनमः ४ ॥ श्रीदिननाथाय ॥ ॥

नाम
३

गर्भाधनं पं सवर्नं सीमन्तान्नयनं ततः ॥ जातकर्म ततः नाम निष्कुमान्नाशनकथा ॥ वृज
वत विवाहश्च प्राक् ॥ पूर्वोदं क्रिया ॥ संक्रपा हिरव्यततस्मादिधनमधूनाकुमारः ॥ यमकि
यानामः ॥ ॥ वृक्षादिपञ्चकं हनीत्यसमीनपोष्णमूलारुणार्कह्रस्वह्रस्वविमो नवात्र ॥ प
कसितस्तिनकूलीननृषुकुमारीमीनादयस्ययुवतः ॥ कचवंधमाह ॥ बालवन्धनः ॥ ॥
बलानामृगमूलाद्याः हस्तारादपदादयः ॥ जीवाङ्गलोमवानाश्च ॥ स्नापनं सवर्नं विष्णोः ॥ गर्ह
मात्रामघापूर्वायाम्यथन्यग्रकन्यकाः ॥ गुर्वर्ककृजवात्रसू. ल. (नवाकृतिभुकथा ॥ सोत्रग
रविनाः ॥ ॥ स्याद्युद्धंभचमूठता ॥ प्रसन्ननसीमन्तकर्म ॥ ॥ धोष्णाग्नीन्दुकनय्यादितिगु
नवृक्षानूनाधनयः देव्यानिशयमूरुनययमहर्मन्दानवात्रतरी ॥ लग्नीमीनवृषरुमन्द

द. क
४

रवनेंसाई १२ मास द्यये कर्पूनाम्बितरुगरुक्रदावि (भो प्रा ३४ प्र ४ सी ६) (४५ ४॥ पूर्व यमघा
प्राग्निविष्मखागुरुगद्यये ॥ मन्दात्रयादिन पूग १५५ नैनागरुयाच है ॥ इन्द्रिकुलारत्रिपूक
र्मगताष्टुपापा ४ सोम्यग्रहानवमपंचमकष्टकस्का ४॥ आनाग्धदा विपूलरागसूखापराकाता
चूलरुक्रदावि (भो जगति प्रसिद्धा ॥ पूगसन ॥ ॥ व ४ मास पूस ४ कन्याया ४ पंचमयुसं सन्नि ॥ अन्नप्रा
शनकर्मकितिसूतनविपूलदिनवर्ष ॥ हस्तादिसफकहनिशयधरयूगम पोष्ठा दद्यादितियू (गम
रुनपिष्टरुयू ॥ साकं गुरुग्रहदिन ४॥ अष्टि पक्र न्न प्रागनीशुरुकने प्रथमी ४॥ ४॥ मन्दीलोम
वागु वृधवागधनागम ४॥ नविडी वसितेरागी मन्दाग्री ४॥ सामसूतज ॥ वृधल (ग्नचमी प्रच कन्या
यामिथूनत ४॥ ॥ कर्तव्यप्रागनीकर्मलि (४॥ ४॥ अष्टि करीव (४॥ ४॥ सोमरास्कनसूया ४॥ वृल ग्न स्का प्राग

नाम
४

नृसूदा ४॥ वृधसूकसूनाचार्यालग्नस्का ४ सोख्यवद्धिदा ४॥ काष्ठसंग्रहर्षितस्यवम्ना
लंकात्रयसिती ॥ डिङ्नीघाठानेवमासदाधानविद्यते ॥ अन्नघाठाने ॥ ॥ आदिति
यूगलपोष्णयुग्मं रुनेकलनयथं वलयूगलमूलशुद्धतथाकनपंचक ॥ गुनव
धसूधनसिंवधेतिङ्मरुवर्जिते ४ सतिथिकन (येन न्याहित्वां नवान्नरुलाठाने ॥ वं
पोषकपन्ननवान्नं वर्जयत्सदा ॥ रवकुन्मानननागी पितृर्धनापतिष्ठत ॥ विङ्मसूय
यादध्मं नद्यायी पितृरुतथ ॥ अक्षयुक्दिननेव कार्यसकृतिमिच्छता ॥ नवान्नरु
ने ॥ ॥ माघादिमासयक्ष्ण ४५ डिङ् ४५ यनाव (५४ ॥ चणकर्मप्रकूर्चनि मूनथावुनकर्म
व ॥ येन मासिदिवाकनवान्नं गिस्त्रिसान्निधानेव ॥ चणकर्मप्रकूर्चीत नवावुरुनमार्ज (ग ॥ ता ना
दिश्य ४५ कश्च पुष्पसूच (गचन ॥ हस्तयस्युगठिन ४५ व ४५ यचपोष्णविष्णुकुतूरानि

द.क
५

पूनर्वसु १॥ क्रौञ्चकर्महितात्पूदयक्र (एच. यूकानिवागु पतिनाय दिष्टास्ताना ॥ क्रौञ्चप्रभास
मृगवापल (गुरुन्यार्थकृष्णमिथुनवृषभ ॥ पूष्टिवली बुद्धि विवर्द्धन ॥ १॥ अथ सूत्रागं कनूतरयच
॥ वानेननेधनादिन्य होमानां नाभिभवच । तिथिप्रतिपदं निक्ता विष्टिच पतिवर्द्धयत् ॥ उन्मर्ज
नमासुचयूगमासवक्त्रमत्र । नक्रयान्युधर्म क्रौञ्चवि (अथाष्टौ पौष्या ॥ ४॥ हकिमानेगु नूक्रौञ्च
कुरुकनवोधन । आयुर्नग्न न कह कि. सर्वहकिमनेधन ॥ आयु ४ सामवू (धल श्रीगु नो विद्या
धनंरु (गे ॥ अहृत्तिका ४ पंचमघा मिमेरावाच्य सकारयश्च नूक्रनाथ ॥ क्रौञ्चसर्वसुच नुनानन
पि. नप्रजितीतिपुकटप्रवाद ४॥ नस्नातयुक्तात्कटहसिताना. मर्यागयागु समना न्मूखानी ॥ क्रौ
ञ्चविदध्वानिगिर्मथार्था. किञ्जीविष्णुनी नवभनचाद्रि ॥ आरूयानन पता द्विजन्मनी. दानकर्ममृ
तसूतकसूच. वन्धमाक्रमखदिद्र (एच पि क्रौञ्च मिष्टमखिलसूच। गूषू ॥ ४॥ अथ कर्मपंचमपंचः

नाम
५

भद्रिहृतांः क्रौनहस्यवाद्यनिघ्नानकानवत् ॥ क्रौनकर्म ॥ ॥ हस्तमेषवचिह्नहनिगुनसहि
नस्वातिपोष्णमिनीयू. अक्रादिश्वससोम्यभिहितकनदिनराग्नवर्कगुत्रोच ॥ शुक्रपक्षनवास्तंग
तवतिहृगुननेवत्रिकतिथोच. केन्द्रजीवहृत् (गोवासहज निपुगतो ४ पापके ४ कर्तुवध ४ ॥ कर्तुवध ४ ॥
॥ कमलगसफकहस्तगुय. मिशालनाधनाष्टपुर्वेषू ॥ पोष्णमूलकार्याविद्यानम् ४ भित्तपक्ष ॥
विद्यानम् गुन (ग्रहा. मध्यमोहृगुलस्करो ॥ मनर्षिभित्तोमास्यामविद्यावधसामथा ४ ॥ संप्राप्तपंचम
वर्ष. अपसूफजनादन ॥ अष्टिप्रतिपदा (शेव. वर्कयित्वातथाष्टमी ॥ त्रिकां पक्षदष्टाचिव. सोत्रिलोमदिन
तथा ॥ अर्वसूनिष्ठितकालविद्यानम् कुरुकानयत् ॥ इजयित्वाहनिंलक्ष्मीदवीचापिसनस्वति ॥ स्वविद्यां
सूत्रकानां स्वस्वीचविद्यां विष्णुसत ४ ॥ गुनगुनकोष्ठिल (गु. तदी (गोवागुलगुह कन्द ॥ यदिवात्रिका
संस्तु. त्रिषगयतगुलपाप (शेवरादुतथा पोष. अव (वाचाम्बिनतथा विद्यानम् कुरुयस्य गुरुत्वीपुनः

द४क

६

हवेत ॥ ६० ॥ विद्या नमः ॥ १ ॥ प्रायः संस्कृतं ॥ १ ॥ प्राक. पंचमहायनहितं ॥ वृत्तं गरीष्टमकार्यं मष्टमनवम
पिवा ॥ गरीष्टमष्टमवाष्ट पंचमनवमपिवा ॥ कार्यविप्रस्य नास्ते मु. द. ॥ अष्टतु द. ॥ वि. ॥ १ ॥ नास्ते स्वकाद
॥ वर्ष. ॥ अस्तु वै दिवा कन. ॥ वे. ॥ अस्तु द. ॥ वर्ष. चन्द्र. ॥ अस्तु न. ॥ पिवा ॥ वृत्तव. ॥ अस्तु चन्द्र. ॥ ॥ सु. ॥ वि
तापकन. ॥ अस्तु म. ॥ धना. ॥ अस्तु न. ॥ य. ॥ व. ॥ न. ॥ क. ॥ तु. ॥ राज. ॥ न. ॥ व. ॥ ॥ अ. ॥ का. ॥ द. ॥ अ. ॥ स. ॥ क. ॥ ल. ॥ अ. ॥ म. ॥ क. ॥ ल. ॥ वि. ॥ वि. ॥ ॥ अ. ॥ स.
यू. ॥ ना. ॥ भि. ॥ यून. ॥ न. ॥ व. ॥ द. ॥ ॥ अ. ॥ व. ॥ राज. ॥ ॥ न. ॥ वि. ॥ अ. ॥ ॥ ॥ ॥ अ. ॥ मा. ॥ अ. ॥ मा. ॥ नि. ॥ स. ॥ ह. ॥ अ. ॥ प. ॥ ग. ॥ त. ॥ ॥ अ. ॥ स. ॥ न. ॥ अ. ॥ म. ॥ न. ॥ य. ॥ वृ. ॥ ता. ॥ प.
न. ॥ य. ॥ न. ॥ वि. ॥ द. ॥ अ. ॥ ति. ॥ नि. ॥ न. ॥ ॥ अ. ॥ य. ॥ प. ॥ ग. ॥ च. ॥ द. ॥ अ. ॥ म. ॥ नि. ॥ य. ॥ न. ॥ च. ॥ तु. ॥ अ. ॥ वि. ॥ द. ॥ व. ॥ क. ॥ य. ॥ य. ॥ प्र. ॥ क. ॥ न. ॥ न. ॥ वि. ॥ स. ॥ र. ॥ व. ॥ त. ॥ व. ॥ मा. ॥ अ. ॥ ॥ न.
॥ अ. ॥ प. ॥ अ. ॥ म. ॥ क. ॥ सि. ॥ त. ॥ स. ॥ न. ॥ तु. ॥ न. ॥ र. ॥ ग. ॥ अ. ॥ र. ॥ व. ॥ प्र. ॥ द. ॥ ना. ॥ ना. ॥ अ. ॥ म. ॥ वि. ॥ अ. ॥ न. ॥ द. ॥ न. ॥ व. ॥ म. ॥ र. ॥ र. ॥ व. ॥ दी. ॥ क्रि. ॥ त. ॥ ॥ दी. ॥ र्घा.
य. ॥ र्म. ॥ द. ॥ न. ॥ स. ॥ व. ॥ वि. ॥ र. ॥ व. ॥ ॥ सा. ॥ ध. ॥ वि. ॥ ती. ॥ य. ॥ र. ॥ व. ॥ अ. ॥ य. ॥ क. ॥ य. ॥ म. ॥ ति. ॥ सी. ॥ वि. ॥ त. ॥ ध. ॥ न. ॥ म. ॥ य. ॥ त. ॥ थ. ॥ अ. ॥ य. ॥ अ. ॥ तु. ॥ ॥ व.
त. ॥ व. ॥ अ. ॥ वि. ॥ ज. ॥ ती. ॥ नी. ॥ वि. ॥ अ. ॥ अ. ॥ जी. ॥ व. ॥ अ. ॥ क. ॥ य. ॥ ॥ ॥ च. ॥ अ. ॥ अ. ॥ अ. ॥ तु. ॥ वे. ॥ अ. ॥ न. ॥ क. ॥ जी. ॥ य. ॥ नी. ॥ क. ॥ अ. ॥ क. ॥ य. ॥ ॥ ॥ तु. ॥ न.

नाम

६

छुट्टि ॥ ॥ माघादिमासस्य द्वादशमस्य लावर्धने हि तं ॥ चतुर्दशमासाय अक्षय्यमासे न ह्यस्य ॥ मा
 घाद्विंशतीलाय ॥ रुद्राक्षं ॥ अथ दत्तवत् ॥ ॥ चतुर्दशमासाय अक्षय्यमासे न ह्यस्य ॥ मा
 हननीति ॥ आषाढके तु राजन ॥ ॥ अथ चतुर्दशमासाय अक्षय्यमासे न ह्यस्य ॥ मा
 सप्रकल्पं ॥ ॥ प्रतिपदि मदिना सकृदुत्तिष्ठन् विना रात्रिं द्वितीयायां नीति ॥ अथ
 वीजित सकला निष्कृतीयायां ॥ मन्दमतिर्गन्तविह्वली नष्टपूने ॥ रात्रिं तु ध्यात्वा ॥
 पञ्चम्यां वक्रविक्रुपं पूज्यं पूज्यं न न पतन्मतिमान् ॥ अथ मधुचिन्तायां ॥ सफम्यां व्यो
 धितियूक्त ॥ ॥ स्यादष्टम्यां मथाल्यायूर्नवम्यां नार्थराजनं ॥ दशम्यां सद्यसं पूज्यं उकादस्य
 तु दशम्यां ॥ द्वादश्यां उत्तिष्ठन् मुद्रां मुद्रां निधने वृजत् ॥ चतुर्दश्यां रात्रिं ॥ ॥

द० क
७

चदधर्माक्रयैर्धर्व ॥ मयलावधनं विप्रा वदवादा ॥ अतएव त ॥ अनन्तरायति ॥ ३४ ॥ रवीदूनाचाना
तिदूर्जत ॥ वतानरुणिपुनिर्यमस्यायुष्यप्रजायत ॥ अष्टमोसितथामा ॥ गर्जकोनेपनिनयं वत ॥ अ
ष्टपुष्टदुहितायत्ननपनिवर्कयत ॥ दिनकनकाणिजीव ॥ गभवने ॥ गभरनरु ॥ उदगयनगतकुलस्य
या ॥ गप्रभास ॥ हनिकनगुन ॥ गिवसेउलपूया ॥ वाताग्निकण्डविगसुदिनकनगुनसितवानमो ॥ ३५ ॥
वन्ध ॥ गुणारिदित ॥ एतीयेकादधीवेव ॥ पंचमीदधमीतथा ॥ द्वितीयैतासूमधावीरुवदर्थवलात्ति
त ॥ सफमीदादधीषष्टी ॥ तिथिधनसूदीकित ॥ मतिहीनागतायता ॥ द्विजाति ॥ ३६ ॥ स्यान्नसीधाय ॥
सफम्यामधूम्याप्रति ॥ पदिनिकासूत्रयादध्वविद्याविद्वना ॥ गभवतव ॥ अष्टपुष्टदध्व ॥ अस्मिगतदेवगु
नोगुनोर्वा ॥ अक्रपिवापापयूतयनरु ॥ वतापनीता ॥ दिवसे ॥ प्रल्भणीप्रयातिदेवेनपिनक्रितापि ॥ गभरवाधि
पतोवलवति ॥ कन्दवर्षुविपन्दुजीवे ॥ गस्तमो ॥ जीव ॥ अवलहीने ॥ ३७ ॥ कनारिदित ॥ ३८ ॥ अग्वदाधिपति

नाम
७

कुंजीवायश्चर्ददाधिपः सितः॥ सामवदाधिपावक्रः मणिज्ज्ञः पर्ववदनात् ॥ जीवसितो विप्रानि
उस्यानाच्छुगूविष्मचन्द्रः। अद्राधिपः मणिसूतः मनेध्वनः मङ्कनरवना ॥ पोषादि त्रियमास्य
कृष्णवेष्टाष्टकाद्ययः। उकाक्ष्यान्निनमासि हायनचतुनष्टकः॥ अष्टकाचसमूहिए सफम्या
दिति थिरयः॥ ततः मर्मनाध्ययीत वृतवर्धेव वर्क्यत ॥ प्रातः काजाग्नयेव तुर्यतु यतुमा
सक ॥ चेत कृष्ण द्वितीयायी तिसृष्वष्टका सूच ॥ मा र्जेवरार्जु (ए) वेव आषाढ कार्तिक
तथ ॥ पञ्चम्या घमासस्य द्वितीयायी पत्रित्यक्त ॥ आनीताननूनयत प्रत्या नम्हान वि
द्यत ॥ गज्जर्दिमूनयः सर्व तमवा दूर्जलग्रह ॥ सफमी वाष्टमी विद्वा तथा देवभीवतुर्द
भा ॥ प्रतिपदात्वमावास्या गलग्रह उदाहृतः॥ अष्टमी हन्यू पाव्य निष्य हक्तिवतुर्दभा
अमावास्या हर्य हक्ति सर्व हक्तिवपूर्तिमा ॥ यथा युधिष्ठिरी सनागर्ग एय अनरा जिगा

द.क

८

प्रतिपत्या ० नीलानी विद्ये वतनूगीगता ॥ पोषादिवतुना मासा ४ प्राका वृद्धि न कालजा ॥ वर
यातादिके ततु वरुयत्स फवा सनान ॥ ग्रहनवीना नवनिप्रकम्य कलनं मूलकयतनादिदाय ॥ व
तदधम हा निवद कि तल्लामुया दधम हा निवद निक कित ॥ उवाहमा क ४ शु र्म गलाना भका
हम वव त वधनं च ॥ ग्रह विहाय ग्रह एतन न धा सदेव से फाहम यि प्रया ॥ ५ ॥ एक ना विप नि
त्यर्थं कुर्यात्पा सिग्रह ग्रह ॥ सुफना र्थ प्रया न कु टि ना र्थ वग वधनं ॥ अश न नूप र्ता दीर्घ ४ सु
लिष्टा वा न्न स्य पा ला ४ ॥ राज न्यस्या दू न्न न द एता वेध स्य वित्त्व सी रूत ४ ॥ क म न ल ला ट प्रा ष प्रमा
५ ॥ सु स्या न्य ही ष्ट रु ल दानि ॥ कु म ॥ वि प्र क रि य वे ध न नी द एता का ष्टा नि ॥ ० ॥ नि व त व ध न वि धि ४ ॥ ॥
चन्द्रान्नेध न ग ४ पा पा ल न नि ध न ग म क थ ॥ क र्णु र्ग रु ल ना ४ ४ स्या हि न्न रा एता पया य थ ॥ चन्द्रा ल ग्न
वृ म ग त पा प रु ल ॥ ॥ ॥ नि लो म दि न र्थ क्ता न क रु च प्र ता दि न ॥ ता ना च न्द्र वि षु द्धो च समा वर्त्त न मि

नाम
८

अथ ॥ सूर्यपत्राष्टन ४ पूर्व ४ क्रौंचकथितानि रानि च । उक्तवन्धदण्डरुद्रवर्गानि प्रथमाणि
॥ १०॥ तिसमावर्तन ४ ॥ ॥ श्रीगुरुनादिवसुवासवतवरीच । पूष्याश्विनिष्ठवदाधरुक्तादिपञ्च ॥
उक्तानि कविधिवन्धनसम्मतानि । सोम्यग्रहस्य दिवसवसितचपत्र ॥ १०॥ तिककवन्ध ४ ॥ ॥ दिवासूर्य
निष्ठाचन्द्र । लग्नस्येकादश स्मृत ॥ काटिदाश्विनिष्ठनिगमिष्यवचनेयथा ॥ ॥ धर्माथकाससीसि
द्धयत ४ कान्तमङ्गला ४ । नन्यापिसमयसुस्मादुच्यत प्रथमसूर्यक ४ ॥ ॥ कालगतचन्द्राययष्टमना
नि । गमरवति । गुरुगुमनदीवाच्यपिगुनसुमवर्धव ॥ यद्युदयस्तु ४ कृत । सुस्मादपिसफमादयपा
प ४ ॥ सफरिन्देर्मनदीविक्रयंगस्यपूत्रस्य ॥ यद्युदयस्तु ४ कृत सुस्मादपिसफमायदारोम ४ ॥
मासाष्टकसजीवति । विवाहकालात्यनीपूत्रस्य ४ ॥ सफम । गमर्क ४ कृत्यामृतप्रजाप्रीत्यलीकनायुदयात्
॥ कथितयचवाह । याश्चकन्युप्रसमयपि ॥ यदि कालगतस्तु । गुरुसोम्योदीर्घजीविनीकृत ४ पंचम

६. ३

स्त्रीपूजातः कामिनीगता विपुलधनं । प्रयत्नयदि पुरुषः कर्तुं तदा पुरुषं रवति कन्यकावनया ॥ ८ ॥ उर्वचः
०० विषयः स्वपुरुषं पुरुषं न सीयसुतः ॥ कर्कि तुलावनयसुतः ॥ ९ ॥ उर्वचः कन्यानि निनित्रिताः ॥ स
०० कन्यानि नः ॥ कन्यालारुसि नियमनः ॥ यूग्मस्त्रीगणी ॥ उर्वचः द्विपदाख्यस्त्रीनवांगकवलिनो ॥ उदय
मवलाकयनो यदा तदा कन्यालारु ॥ १० ॥ प्रमदात्मकद्रुकाः ॥ उर्वचः द्विपदाख्यस्त्रीनवांगकवलिनो ॥ उदय
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥
०० उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥ उर्वचः कन्यालारु समादिगतिः ॥

नाम
२

आदोमासप्रयत्नः माससम्बन्धस्य तु ॥ पनतावर्षं बुद्धिः गर्हमासान्विता ॥ चतुर्हिः ४ अष्टि
नष्टा हि ॥ द्वाद्वादशरिक्तथा ॥ वर्षं नूदाहिता कन्या प्रतिष्ठीनेव गच्छति ॥ वात्स्यायनबुद्धिमाचक्षुः
हबुद्धिचवाक्यति ॥ अहिष्ठस्याविना (धनतच्छुद्धिमनूनववीत ॥ ग्रहवत्सनसंशुद्धनरिः ४ कालमप
क्रते ॥ सुस्तुसर्वमिदं चित्तु मिश्या हरगवान् ८ गु ॥ अष्टवर्षाहव (जोनी नववर्षा पुनः हिनी ॥ द
४ वर्षाहवत्कन्या अतुष्टव्यतिक्रम ४ ॥ संप्रोफद्वाद (४ वर्ष कन्यायां वै प्रयच्छति ॥ मासिमासिनः
स्तस्यापितापिवति (४ ॥ मातावैवपितावैव अष्टयातात (४ वैव ॥ अयस्तुननकन्याकिदद्वैक
न्या नऊस्वनी ॥ यस्माविवाह्यत्कन्या ब्राह्मणमदमाहित ४ ॥ असंताप्या चयार्कय ४ सपाथावृत्तलीप
ति ४ ॥ नाऊग्रस्तथवाद् (नपितृभिप्राप्तसंज्ञाय ॥ अतिप्रातापुयाकन्या नानूकस्यप्रतिक्रत ॥ अतिपीठा
पुयाकन्या कुलधर्मवित्तधनी ॥ अविशुद्धापि सा दयाचन्द्रलग्नवलनच ॥ विवात्सवयस्तु अक्तनामृ

नंचन्द्रमासिष्ठ. दशपंचनाठिका॥ वृधपुत्रविर्मासमासमासार्द्धत॥ कृज॥ गुनर्द्धदशमा
सांभ्रसिंहामासान्जनपुत्र॥ नाकविंशतिमासांभ्रनासीनांजानभवच॥ लोम॥ पंचदशहानि. मा
समर्थधिकवृध॥ अष्टोमासांभ्रवागी॥ दिनमकनिष्ठाकन॥ मन्दामासाकृन्वर्षपात॥ पादानव
त्सर्न॥ यावदसुमितस्तिष्ठ. क्रावदद्यात्तुल्यगु॥ दिनकनवृधिनोप्रवणकालगुनर्द्धगुजोरवनः
स्यमध्वमयागो॥ नविसूतगणिनोविनिर्जमस्को. गणितनयरुलदकुसर्वकाल॥ विवाहनविशुद्धि
॥ ॥ कृन्माष्टमाह्यरवनसूपतिप्रधर्से. कन्याकयवसहजादिगत॥ कनाति॥ जीवचपुर्थदशग
न्धिनर्द्धगत्. सोलाग्वविरुसुखद॥ पनि॥ अरयू॥ उचरु॥ स्वटहीसुहृवन॥ गवाचस्यतिनिय
॥ ॥ पुधुयुविविधार्थसोखजनकाजमष्ट॥ गवाहवन॥ नीचरु॥ निटहीदिवाकनकायानूगमीअ
दा॥ निष्ठरुलंददातिनियनैवेधव्यपूजावर्त्त॥ गुनर्द्ध॥ ॥ आघम्वद॥ प्रियकृथादि

द. क.

११

तीयनास्ति निर्वृतिः ॥ इतीयधनसंपत्तिं वदुः (॥ कलहागमः ॥ पंचमचपत्रिउसंभ
ष्टसंपत्तिमूर्ध्नी ॥ सफभनाउसमानं मनर्वाद्यभनथ ॥ नवमकडासंयूकद
भममानसंभृति ॥ अकाद ॥ सर्वसाहं द्वादस्यमृत्युभवव ॥ एतवननवमाद्विती
यगः पंचमापिष्ठुहकनिष्पन्नः ॥ वर्धमानतवनिष्यतव (वेदवमक्रिसदृश
॥ रुसनसः ॥ वानक्रपकादिगतहिगतीहिमा (॥ एतुहृष्टं पक्रमूदाहनीति, सि
गतनादावष्टुहृष्टं पु, पक्रावनिष्टुहृष्टवतान्यथाना ॥ ना (॥ एतना (॥ एतदा (॥ एतदा
नवस्का (॥ प्राकाः केचित्सूत्रिहिः ॥ प्राविताद्याः ॥ यथावाहययुकार्ययूनूनी, सीका
उल्लिखतुलं विननीयं ॥ प्रवासनस्यस्यमृताजयाख्याहस्यानतिः ॥ कीतिनसूक

नाम
११

तुका ४॥ कनाकर्यं सुस्मितं केपि न च दिष्यते संख्या हि म (ग) न वस्का ४॥ अथ दिशु कन्दू घ
टी समूहा वदाहता वा ए समूह रका । लक्षार्थ (ग) अथ नि नि क्रियाया ४ ए वत्त्व वस्का गत गम्य
या ग ४ न विनृप विला कन सन गु नृ विवाहात्स वन (ग) धन निनन्द ना रगु सत ४ प्रया (ग) ॥ व
ली ग नि गुरु वल दीक (ग) नि शिव ल ग म नु व (ध) वू ध ४ ग ॥ सकल कर्म सु क्व मदा हत सु नि ति ४
चन्द्र उद्दि ४॥ ॥ ऊर्म सम्य दिपत क्रम प्रत्या नी साधने धना ४ मिता ति मिठ ग सा ना न वर दा र व
निच ॥ प्रथमा सिद्धि दा रुया द्वितीया वृद्धि दा यिनी । तृतीया मृत्यु दा व व चतुर्थी सिद्धि नू रुमा ॥
पंचमी (ग) कदा मृत्यु ४ अष्टी सर्वार्थ साधका ॥ सफमी व्याधि वरूला अष्टमी प्रीति सोख्यदा ॥
प्रीति सोख्या च नवमी ता न का ना रु मान दा ॥ दशम वल वती ता ना शुक्ल चन्द्रा वला रुम ४॥ त सा र्का
र्य प्रयत्न न विगु र्छ चन्द्र ता न क ॥ न द्द रूप के ग नि नि प्र सा स सा ना वली त ग विवा र्य द र्य

द. क.
१२

विदधामि सु विकलं च पश्यो सुधीः सिकार्या सिकनारिया गमः ॥ तानाम्मुचन गच्छन् यव
चन्द्रावला रुमः ॥ स्वामिनो पनितुष्ट न गृह्य का पा निनर्थकः ॥ सिद्धिदा वृद्धिदा वेव मृत्युदा
वविष्णो वगः ॥ जन्म रक्षन् नाना ताना लिपु काना प्रकीर्तिता ॥ यादृ (जनहि मना ष्मि मा लिना
संक्रमारवति तिग्मना विष्टः ॥ तादृ र्गुरुल मचा प्रयान्न नः साध साधिति व (जनणी त (ग
॥ यादृ (जन गण क न ग्रहः संचन नृणां ॥ तादृ र्गुरुल मा प्रा ति गु र्वा यदि वा गु र्वा ता
ना वला दिन्दु न (ध न्दु वी र्या दि वा क नः संक्रम मा स नः कः ॥ ग्रह य सर्व पि व र न ल नार्ह व
श्रु ग स्ता अखि सु प ग स्ता ॥ ताना विप क्रम विना स संज्ञा जगामु ति सा रय दा प्र दिष्टः ॥
॥ प्राज्ञः प्रसादाद यिना रिया ॥ ४ क्रौ न प्रया (व व त पू र्षि क व ॥ स्नाना रिष क व त व न्ध

ना प्र
१२

[illegible]

द. क.
१३

८१. बलिनासन्निनीकित४॥ सव्य (गम) मिश्रयुक्तसु. मिश्रदृष्टि. निमन्दिन॥ द्विपंचनवमचन्द्रानि
शुक्लचन्द्रादहोरात्रं॥ चन्द्रप्रसंसा॥ ॥ मेषाक्षयिकसुगमननकूरुसंस्तु प्रत्यातनकनतलप
हृत्पुष्पसं॥ ग्रीष्माक्षयिकसिन्धु (गन्धुमपिस्त्रितन मासाधिकत्रिदिनसंस्तु) दिनाममव॥
नाथाटप्रहृतिचतुष्टयविवाहा. नापोषनचमधूसंस्तु कवि (अप्यः) ॥ देवास्तं गतवति लार्ज
वनजीव. वृद्धस्त्रेन स्वतुल्यार्जवात् लाव॥ वक्रचैव त्रिचात्रि दणपतिगुत्रोदेष्ट्य पूष्टस
लफेष्टुर्वादिष्ट्यविमासेदिवसकनवि (अ) ४ संगमचैत्रपोष॥ विष्ट्याकनूदयवोसूत्रदि
सूत्रगुत्रोसिहसंस्तु मनूषा. वर्षास्वाप्नातिचाटसूत्रियतमनदीदवकन्यापितृकु४। उ
नावसुपतिहन्त्या. कृकवास्तवकन्याको॥ चन्द्रनक्षत्रोचैव तस्मादगाविबर्क्ययत्॥ बाल

गाम
१३

वदूर्णानानी, संध्यायाकृतपस्विनी ॥ विधवास्तु गतमुक्त क्रीडावेव दनिद्रता ॥ वारवृ
क्षवसन्ध्या (प्र. चतुः) पंच विवासा ॥ जीविवराजवचैव, विवाहादिष्ववर्ज्यत ॥ पूर्वोदय
जीष्मरात्रि, मुक्तस्य प्रश्निमद ॥ ४ ॥ पंचाहानि वृद्धराव, पूर्वपंचदशमनिव ॥ ४ ॥ वृहस्पतौर्धा
लवृद्ध, पद्मभवविवर्ज्यत ॥ नीचदिमासबहुतित्वा ५ ॥ विष्णुका निव ॥ सिंहगुप्तो गत
कार्थानिविवाह ४ कदाचन ॥ मखस्तु वदिवाना ॥ ५ ॥ सिंहस्तु पित्रु रपुद ४ ॥ नवानदशा ४
प्रहवनिनाशो, विष्णुस्तु २ ॥ कस्तु मनेष्ट्रनस्य ॥ अर्धसमासाद्यविलासिनीना, यथा कण
काविरुलीतवनि ॥ मघाशुगमिनाहस्ता, स्वातिमूलानूनाधका ४ ॥ वतीनाहिनीवेव
चूरुना ५ ॥ यथा ॥ ५ ॥ तास्तु वविवाहानि स्तिनालिस्कापनानिव ॥ स्कापयत्सर्ववी

द. क.

१४

शामिगृहीतमे प्रवहनी ॥ तृग्विना वृध दिन शुस प्रकाशाने कृतिरमिसूत सूर्यशने
शुनात्त ॥ कवि लिङ्ग ननु कथय निष्ठाने श्वनस्य सायपत्तिपीठित मतिं विमिनाशु
वान ॥ उलाव मिथून केन्या पूर्वा ह्य धनूषा दृष्टा ॥ उत्तरलग्न ४ शुक्रा नित्यं मध्यमाः
श्वन पत्रस्मृता ४ ॥ केन्या उला हिमिधून स्यात्तु ॥ अथ श्वसा धीधनवर्जिता च ॥ नष्ट
शयिल ॥ अद्विपदी ४ ॥ कृष्ण ४ ॥ केन्या वल ॥ अथ पिना न्यता ग ४ ॥ ॥ गतुलायुग ४ ॥ केन्या ना
नवी ४ ॥ शुक्र ४ ॥ स्मृता ४ ॥ धनूष ४ ॥ प्रथमा ४ ॥ गत विवाह न्यच मध्यमा ४ ॥ मध्यम
निधनीनी मया यामुनवी ४ ॥ का ४ ॥ दृष्ट केन्या मृगनाशु ३ ॥ मकना यानवी ४ ॥ का ४ ॥
उला मिथून कम्हानी उला यामुनवी ४ ॥ का ४ ॥ कर्कट श्विकमीनानी कर्कट यानवी ४ ॥

शाम

१४

का ४॥ अष्टमस्य पतिवर्गः शुक्रमिहं नोऽपि वा ॥ पञ्चदशरात्रं ४ सर्वदा या न्य नि
शुला ४॥ ॥ माधवनवती कन्या शुक्र ॥ ५॥ पुनरावृत्त ॥ वेला ॥ खचतथ ॥ अष्टपत्यूनयनवहला ॥
आषाढकृतद्विष्ट ४ स्यादम्यमासः शुक्रिणी ४॥ मार्गशीर्षमपीकृति विवाहकापिका विदा ४॥ वृत्ति
विवाहमासा ४॥ ॥ अमावास्या च निक्ता च वानवला च नमः ॥ गण्डाना ४ कूनवान् शुक्रनीया ४ प्र
यत्नः ४॥ नन्दारद्राग्या निक्ता पूषुर्भवतिथयः ४ कृमात ॥ वानवर्ग्यसमाचर्या तिथयः ४ प्रतिपन्मूला
४॥ शुक्रिणी सफमन्त्रद्वितीया तमिनन्दन ॥ चन्द्रपुत्रपुत्रे मन्त्र देवाचार्या तथा अष्टम ४ देयपुत्र
नीयन् मनोऽष्टनिन्दित ४॥ प्रह्नार्द्ध ४ पुनरावृत्त ॥ वानवला ति कथ्यत ॥ वृत्तिवानवला ॥ ॥
हर्षा कर्कचयार्तच तिथ्यनीयमर्घ्यक ॥ दग्ध तिथिचरानीच कलिकचविवर्क्यत् ॥ पुनरावृत्ति

द.क.

१५

पूर्वमीपर्वरा (ग) चतुर्थिभकादष्टिना त्रिरा (ग) ॥ कृष्णरुतीयादशमीच नजो दिवाच सफ्रव. च
तुर्दशीच ॥ ॥ तिथिश्चवानस्यच यशस्यया अयादशस्युम्मिलितकनसति । सयाग ४ कर्कचा
विधनका विवर्क्य ४ ७ रुकमीसूकर्व ॥ मासान्कदिनमर्कतुतिथ्यनघटिकादय ॥ घटिकात्रिन
यैरान्क, विवाहपत्रिवर्क्ययत् ॥ मासान्कसीयनकन्यातिथ्यनम्यादपूत्रिणी ॥ नक्षत्रान्कचवेध
वीविष्टे मृत्युर्दयाहवत् ॥ मीमचापद्वितीयाच, चतुर्थीरुषकैरया ४ ॥ मसकर्कज्या ४ षष्ठी
कन्यायीमिधूनकृमी ॥ दशमीरुषिकसिंह, द्वादशीमकरतुल ॥ एतामुतिथयादग्म ४ गुरु
कर्मनिवर्कित ४ ॥ सूर्यचसफमीसाम, षष्ठीलोमचपशुमी । वृ (ध्रुवतुर्थदिवस् रुतीया
गुनन्दन ॥ द्वितीयावर्कनीयाच, प्रतिपद्यननेचन ॥ कलिकाख्याहिया (ग) यं विवाहादीन

नाम
१५

स्यत ॥ ॥ अव (गर्जगुणरूपा. वितालः स्याकवर्गकः चवर्गः सिंहनामा स्या. दवर्गः
कूर्कः ८४ स्मृतः ॥ सूर्यारवः स्याकव (गर्जपि. पव (गर्जमुखकामरः ४। यव (गर्जमृगनामा स्या.
रूपा मयः ४१ वर्गकः ॥ स्वव (गर्जपनमा प्रीति. मिर्ध प्रीतिश्च कथ्यत ॥ उदासीन प्रीतिन स्या.
अकव (गर्जमृतिर्हवत ॥ ॥ अग्निनी मृगनवर्यो. हस्तः पूष्यः पूनर्वसूः ॥ अनूनाया प्रीतिः
स्वातिक यिता दवता गेह ४॥ तिस्रः पूर्वा उरु नाथ. मित्रा व्यार्द्रा वना हिनी ॥ लन दी च मनूष्या
रवाग (गर्जसो कयिता व (धे ४॥ कर्त्तिका वमघा (गर्जया. विष्णु रवा गत गानका ॥ विनाशका धनि
छाव. मूल नका ग ४ स्मृतः ॥ स्वगदा पनमा प्रीति. मर्मधमा दवमर्यया ४॥ मर्यना कसया
स्मृत्युः कलहा दवना कसा ४॥ ॥ इति गण प्रीतिः ॥ ॥ अष्टमि प्रीति सार्धे न. मृत्युः स्यादष्टम

द. क्र.

१५

प्रवे ॥ द्विद्वाद (अचदानिद्रं नवमपंचमकलि ४॥ ॐ तिनानिभनृत् ॥ ॥ मीनालिकर्कणविप्रा ४
 कणमया हनिद्रं ४॥ वेष्मयुग्मं तुलाकं मूडाकं न्यो वृष्मिग ४॥ नारुमानूचहलीन्या
 वाक्मणीचवि (अथत ४॥ मीयतहीनवर्षुष्वव्रक्त एसह (अयदि ॥ ॐ तिवर्षुषीति ॥ ॥ वधु
 अष्टायदानानी तस्या ररुन जीवति । अथवा जीविताररु । अरुपुशधनवक्रिता ४॥ ॥ पोष्ठा
 दिक्कषकमूष्मिपूर्धा । माद्रादिकं द्वादशमध्वरागं ॥ पोर्नदनार्थं नवकं रचकं पनेचरागं
 एकाविदग्ध ४॥ पूर्वरा (अपति ४ (प्रष्ठा । मध्वरा (अचकन्यका । पनरा (अचनक्रु । द्वा
 ४ प्रीतिर्महीयसी ॥ ॐ तिनक्रुषीति ४॥ ॥ सिंहविनावसा ४ सर्वद्विपदानां चतुष्यदा ४॥
 एका अलचनारुक्वी रयल्लानसनी सृपा ४॥ मकनस्य पूर्वरा (अमस ४ सिंहधनूर्वय ४॥ च

नाम

१५

तु ४ पदा कीट संज्ञा ४ कर्कसर्पश्च वृद्धिः ४ ॥ अतिवृद्धिः प्रीतिः ॥ ॥ अश्विनी वानर दण्ड ॥ अश्विनवती
हनुमत् ४ ॥ पूष्यश्चरुर्हि काष्ठा ॥ गमनागमश्च नाहिली मृग ४ ॥ आर्द्रा मूलमपि च मूषक ४ रु
तुली मघा ॥ मार्गशीर्षादिति नक्षत्राः ॥ गमनाति नूतना नक्षत्राः ॥ महिषोत्वाति हस्तोच मृगशिरा नूतना
श्रिका ॥ व्याघ्रकिरा विष्णुखाच ॥ अश्विना ॥ उचमर्क ॥ विरूपाक्ष पदसिंहा नकुलश्च ॥ शिखिस्मृ
त ४ ॥ यानय ४ कथिता रानी वेनमेती विचार्यती ॥ अतिथानि प्रीतिः ॥ ॥ एतव्याघ्रगज सिंह मधु
महिष ॥ अश्विनव वक्रग वेनवानन मखकच सुमहर्ष द्विजलान्दूल ॥ लोकानां व्यवहारा नान्यदपि
नक्षत्रा प्रयत्नादिर्दम्पत्यार्तपटययानपि सदा वर्धते ॥ अहस्याधि ४ ॥ सत्त्वविर्लोधि ॥ ॥ मनः ॥ अपि
दमाणाश्च मंगलादीनि वपुः ॥ वनस्प पञ्चम कन्या कन्यायानवमं च ४ ॥ नक्षत्रिका लकंया च

६. क

१७

पूजयेत्सुखावहे। स्रुष्टकृत्तवन्मृत्युयत्नतस्तु विचानयत्॥ ॐ तिनामिमलनी॥ ॥ अम्पस्यमकृष्ट
 प्रीतिमहिष्याभ्ययथागवा। यथायाप्रस्यहिहयू, मुखिकस्येगजे४सह॥ सत्वप्रीति॥ ॥ उर्ध्वनाठीप
 तिहन्ति, मध्वनाठीधनक्रय४॥ अ॥ धानाठीगुहंप्राफ, नाठीचैवतुमध्वमा॥ राप्यापस्यास्त्वकनाथा
 र्हेस्ति४पनिवर्क्ययत्॥ तर्कनाहन्ति साक्रिपु, तस्मात्तुत्तय४॥ युयनाठी॥ ॥ सप्योकातीतिख
 च्चकीविवाहचिनाठिके॥ अ॥ ष्विनीप्रमूर्खलंच, दत्वासाभ्येविचानयत्॥ एकनाठिस्तुनक्रुद
 म्यथा, मर्मनलप्रद॥ सवाया ॥ एवद्वानिर्विवाहस्त्वगुहंरवत्॥ ४॥ तिहन्तिचर्क॥ ॥ गिनस्का
 नपतिहन्ति, वक्रुस्का, चित्तहन्४॥ स्वनस्कानेसूरहन्त्या, दूतसूधननागने॥ पादस्वकसहनि
 र्थं हनिमूर्कप्रकीर्ति॥ हनिमूर्क॥ ॥ पूर्वरागयुक्तिरुपतिप्रिया, याचितामपनरागया, जि

नाम
१७

नी ॥ म्नी नृत्तं हवति मध्वमया त्रिनी प्रमनून मूरथा ४ पत्रस्य नृ ॥ पत्रस्य नृद ॥ ॥ मकन
क ॥ तिमस्य युवत्या तुलस हमी नकुली लघटन ॥ धनू वृष वृश्चिक मन्मथना ॥ ॥ मन्मथना कुनानी
सुत सुकथा ग ४ ॥ ॥ मन्मथका ४ ॥ ॥ वृष तुलया सहकन्य घटेन मृग मिथुन वनना ऊन व ॥
कर्कट धनूया वृश्चिक मन्मथ ४ सुकधन प्रीति सुत सुकथा ग ४ ॥ मिथु वृषका ४ ॥ ॥ मन्मथका ४ ॥
गन्तु हसुत हावकन्या धर्मस्मिता सुत वती पतिवत्तराव ॥ इव स्मिता धन हनी व्यय ग ४ धनाद्या
वृष वृष विधवा निधन विनायू ४ ॥ ॥ काद ॥ ॥ वृत्तीय कुल वृद्धि रवति नाशु नियमन ॥ ना
॥ ॥ कन सुताथ प्रीति ४ स्वर्क धन वृद्धि ४ ॥ ॥ द ॥ मच तुर्थया ॥ ग हवति युवत्या धन शुक्ल पूजा ४ ॥
समस फक तुया ॥ ग दम्यया ४ सोम्य मन्मथ ॥ ॥ मन्मथका ४ ॥ मिथुनी प्रदय कीर्त्य सुतृप्य नव

द.क
१८

पञ्चकच ॥ विद्वाद् (७) वक्तुयुगं प्रदर्शयथा विधिवाग्नायकजनैव ॥ नूतिदम्पत्या नन्या
न्यागं ॥ ॥ अकादशी द्वितीया च पञ्चमी सप्तमी तथा । उयादशी तृतीया च दशमी च
रावहा ॥ चतुर्दशी चतुर्थी च नवमी च विवर्ज्यता ॥ यदि त्रिकाशनिदिनपरिसक्त निवर्द्ध
नी ॥ नूतिविवाहतिथिः ॥ ॥ पंचाङ्गस्त्वापयदुर्वाः पञ्चतिय्यं च खस्तथा ॥ दोषोचैव बुद्धि
का (७) च कुं पञ्चशलाककैः ॥ नूतिभनकान्ति कादया क्रमादया निरुनिव ॥ ग्रहस्तु प्रदात
व्याः ॥ उराण्डुहविचानयता ॥ अन्त्यः पादावेष्टयदवा दयस्य विष्णु विष्णु स्थापनाय चैव तस्य
। प्राकृतिकिः सारिजिस्तु कश्चैतत्स्वरवचना हिनी माचव ॥ ॥ नूतिपञ्चशलाका ॥ ॥
अतः ॥ पत्रमहादविमलाकाचकसूचता ॥ रुद्रेण समतिरिनी प्राचयमानेन च प्रिय ॥ नन्या

नाम
१८

नन्नादिदृश्येषु विविक्त्याद्यादि (अथ त ४॥ चक्रीसफसलाकार्यं सदसं नु लहदनी ॥ स
फपूर्वा ४ पनात्रखा स्सफैर्वेदत्रि (अथ त ४॥ तस्या (प्रदृष्टिकादीनि क्रम (अथ तानि विन्यस
तु ॥ पूर्वादि क्रमया (ग (अथ तानि विन्यसितं सख्यया ॥ तत्र विन्यसितं (अथ तानि विन्यसितं
मिरी ॥ वक्षितीगुह संस्त्रित्वा प्राच्यमानं (अथ तानि विन्यसितं ॥ यत्र क्रक्रेन संपूर्क विद्यादा सिगितं पि
य ॥ कुनस्य सन्मुखसंरं तत्र विन्यसितं (अथ तानि विन्यसितं ॥ कुनस्य संपूर्क विद्यादा सिगितं पि
आलिङ्गितं हयनागं कलना (अथ तानि विन्यसितं ॥ हतं द (अथ तानि विन्यसितं ॥ ल
लापातायुतिर्द्व (अथ तानि विन्यसितं ॥ एकान्तं लपगुहोचका निमान्यतथापनी ॥ दग्धति
धिष्व विन्यसितं दग्धतिर्द्व (अथ तानि विन्यसितं ॥ एतादृशान्यनित्यं लपगुहोचका निमान्यतथापनी ॥ दग्धति

दशसंख्यतु, कितिपूवसूतीयत । सूतमन्त्रोतथाषष्ठनविपूवसूतथाष्टम ॥ पूनस्तित
 नदवति, वन्दायाऽनविलामत ॥ द्वाविंशतमणीकूर्यान्तवमसिंहिकासूत ॥ तफ
 मसामपूतमु, पुक ४ पंचमरुतथा ॥ सूर्यसविहना ॥ ४ स्यान्कृताकूठानेष्टवने ॥
 मनकीजीवलकाया, वन्धुना ॥ ११ रवन्धिये ॥ १२ कृत्वाकार्यविठ्ठलम्यनर्थ ॥ १३ सूनना ॥
 वन्धुनमहासा, ललापातदुलसूत ॥ १४ तिलका ॥ १५ सूर्यतुकाचनक्रयात्याग
 वक्रविधीयत ॥ मघा ॥ १६ आचविशव, सानूनाधचनवती ॥ १७ व ॥ १८ पिबवद्वार्य, पातद
 ष्ठातिगद्यत ॥ अश्विनीमवधिहत्वा, गद्यल्लग्नरावधिः ॥ पावक ४ पावमान ॥ १९ विकान ४
 कलहापन ॥ २० मृयू ४ क्रयश्चविक्रय पातषट्स्यलकणी ॥ सूर्यजक्रापिरुदव, यततते

वगणु क४॥ यस्मिन्स्मिन् वदन्तु ॥ सुस्मान्मन्त्रमल्लत४॥ तच्चतुर्थं कुर्वन्त्ययं यष्टया
 घातमूच्यते । शिवतनुपूज४ वष्टु दशमवेष्टतीत्येतत् ॥ व्याघातलाताद्यटिकाचतस्र४म
 वष्टुनिष्ठैकववेष्टतीति । शिवापि गण्डुपि मूढरुमकं सहस्रपातमुविचिन्नीयान् ॥ पा
 तनपतितावृक्षा पातनपतिताहनि४॥ पातनपतित४र्षास्तु सुस्मात्यातविवर्ज्ययत् ॥ ॐ मि
 पात४॥ ॥ एकतरवास्त्रिताविद्धादिननाथादयाग्रह४॥ विवाहतरुमामनु नजीवेति कदा
 चन॥ ॥ वृषीचमलाकाया विचार्यवधवर्ज्ययत् ॥ न विव(धनुर्वेधव्यं कृजव(धकृलकृय॥
 वृधव(धरवधव्यं प्रवर्ज्यगुनवधत४॥ अपूर्णगुणैकव(धव(धेनवन्द्यचद४ शिवता॥ पत्र
 पश्योनतानाहो कतोस्वच्छन्दचानिधी॥ ॐ तिवध४॥ ॥ यत्तु गहलवच्छदग्रहस्तु य

द. कु.
२०

दाहवत ॥ यतिदाससुदासुया विताणुर्कणुलणुत ॥ नविनासयूताहनि लोभननिधन ॥
॥ कनोतिमूलनार्णव. राककणुअनेभवने ॥ ॐ तियूति ॥ ॥ चतुर्दशचनकने यामिनेल
नरास्मृती. गुरुयूकं तदिच्छुक्तिपापयूकंचवर्क्येत ॥ चन्द्रवादिष्टुकजीवा. यामिनेलणुतका
नक ॥ ॐ तिया निठ ॥ ॥ धार्यातिथि १५ न्मास १२ देण १० ॥ ८८ वदा ४ संका निजातदिनेय
याश्च ॥ गुरुर्विरकायदिपंचकस्या. डागसुथागिर्नृपचोनमृत्यु ॥ ॐ तिवृध पंचक ॥ ॥ या
ग ॥ ॥ विषमसेका १ दयाष्टा विष्मति ४२८ सम ॥ अर्द्धकत्वाग्निनी पर्वमकरसुद्धिदीयत ॥
विष्कम्हचग्निनी दया प्रीतास्वाती निगद्यत ॥ सोराण्यग्निविष्मसस्यात आयुष्मा नूनपीयू
ता ॥ ॥ अहनकृत्तिकासुया १ नूराकाचातिगणुक ॥ नाहिणीचसु कर्माख्य. ८ तोष्ट्र ८५

गान
२०

कीर्तिता ४॥ गंतु मूल मृग मूल, वृद्धो बादा निगद्यत ॥ पूर्ववाटा ध्रुव प्राका, बाधा गव
पूनर्वसू ४॥ ह्यने वा रुना साटा वद प्रष्य प्रकीर्तित ॥ अरि शिखर तथा सिद्धा च (अ) सा यति
पातक ॥ चनीय सि प्र ति दया, पत्रिय च मघा तथा ॥ निवध निष्ठा दातव्या, सिद्धो पूर्वो वरु
भुली ॥ सा (अ) न हि सा दया, गुरु वा रु न रु भुली ॥ पूर्व राद्र पदा भुक्, रुका बु न नी की कि
ता ४॥ उरु नारा उ पूर्व च विजा दया च वेष्टित ॥ सूर्या च द्र समाया (ग) रु व द का र्ज ली तथा ॥
प्रया दण ति र्या नखा, एका द्वी मू द्वि विमृता ॥ या गी क प्रा क न रु उ, रु य म का र्ज ली व (प) ४॥
०० ति न का र्ज ली ॥ ॥ अष्टा विंश रवा विजा ग्नि मूल च विक्रय ४ स्मृत ४॥ विक्रय ॥ ॥ कल कर्मा
नि सर्वाणि, कृपा या न मू नानि च ॥ अरु पि रु ध निष्ठा रवा, तिष्ठ मिष्टा रु नार्क ४॥ वन (न)

द.क.
२९

नदं प्रोक्ता. गुनसामदिनसित ॥ सितपक्कं चन्द्रमृगकर्हिमप्रादय ॥ प्रा. ॥
लिकल (वत्वादिकलर्म ॥ ॥ हस्तमं तु मघाप्रप्य धनिष्टारुनवान् (दी ॥ प्राजापस्व
चक्रपानी. खननं मुनिरि ॥ स्मृती ॥ आ. (नययदिका (दी. अमस्य पुनस्य पदिरवति
कूप ॥ नित्यं कनातिरयं दाहं च समानसं प्राक ॥ नैर्त्यका (दी. वालकयं च वायुय ॥ दि
कयमनत्त्यका सर्वा ॥ गुणवहा कूपा ॥ स्वादूस्वर्कलघु सिर्गि. स्तिनर्मर ॥ गुणी ॥ क ॥ प
नूनामप्यथयस्या त पय ॥ पापनवी ॥ क ॥ कूप खनन विधि ॥ ॥ मृदू क्वकि पुन
नवमूलं मघा विष्णोया सहितं पूरय ॥ हलप्रवाहं प्रथमं विदध्या नीनागमूकानि
तसो नरये ॥ ॥ उग्र ॥ पूर्वा मघा नका क्वगदी की पूरुना सिस्वर्वा तादित्य हरित

नाम
२९

यवनग ८४ पूर्या विहसत न घू ४॥ विना मित्रमृत्तान्मृदूग ८५ स्त्रीका दिवद्वन्द्व
युक्ति ॥ अग्नि ८६ सविष्ठा वर ४७ उरुल ४८ सर्वस्वकृत्य ८९ ॥ युनन विष्ठा गि सोम्य
गुक्रव ॥ वीरनाप ॥ मृदू नियमियुक्त रमिर ॥ प्रद ८९ ॥ सजल कनक वीर गृष्ट मरि
प्रयच ॥ विन विरति निविष्ट वापय कृष्ट विरु ४॥ हस्तन वापय वीर संग्रह विष्णु देवत
नाहिष्मि मर्दन प्रर्या दूना सप्रवर्धन ४ नो दमैत तथ सामकान्य स्पदन कलद ॥ क
दित वीर तथ प्राज्ञ ॥ ल एत वैव युन दय ॥ मूलान नराधन नीधन मानूत श्रुवा गी ८९
कून निष्ठा कनरा स्वनय ॥ जनश्रुदान कन ८९ युग ८९ मितय ॥ अन्यादि कर्तु नमिहा
यदि ८९ कि सन ४॥ अक्षीका कनरा गनान्य नूरा ना ८९ यरा न्ययुत ८९ कृष्टो रितय

द.क.

२२

ततस्तु कथितं यागायतं लक्ष्म्या विष्णोर्नानवकं तदकं नगनस्यातां द्वितीयं पंचकं यथा
न्याद्वितीयं तदकं। यथैव क्रमं लक्षणं ॥ एतन्मयं पुत्रं न ॥ ७॥ द्वयं विना ॥ ८॥ स्यात्कनारी
सिंहि ॥ स्वामी धारकं नाशय ॥ सधनं तीर्थं च यथैव मृत्युदा। एतत् ॥ पंचकं नाशय ॥ क्रय
कतादौ एतत् हान्यकं ॥ अथ लक्षणं लक्ष्म्या मवकं धितं सर्वं ॥ ९॥ पत्रा कुमा ॥ १०॥
तिष्ठति विधिः ॥ ॥ बीजा नापदं दसु वसु मिश्रकं न विष्णु। मघा मूलं नृणां व
ज्रा, पूष्यं पोषु, रुद्रं विष्णु। मूषिकानां हर्यं रोमं, मन्दं लक्ष्मीं कीट्या ॥ ८॥ नवमं च त्रि
(धैत्रिकं) हीनं सामं विष्णुं ॥ ९॥ एतत् ॥ एतत् मीनं च, कन्यायां मिथुनं तथा ॥ वापय
सर्वं ॥ स्यात्तन्मयं दीप्तं सर्वं संपदं ॥ मूढं धीमिणं लक्ष्म्या च न विधिः विष्णोर्नानवका

नाम
२२

द(१)स्यात्सूक्तवचतुष्टयैव हि न ता एनास्ति गपंचकं ॥ खलु कर्जलमनवृद्धि न पिकानि
सुदुल्लेखकमागत्यादीति प्र एव रयं रुतिरादिजाफिकामकसुदं ॥ अगिहृष्टिननावृष्टि
सूचका ४ मलरा ४ शुका ४ ॥ स्वचक्रं पत्रचक्रं वा कठं ग ० तत्र स्मृता ४ ॥ ॥ ०० ति वीज
नाप ० ॥ ॥ अनिलारु नरुहा शुद्धं मृगमूलपूतवृक्षो ॥ पूष्यश्रवणरुक् षूतनूक
र्मप्रदस्यत ॥ कृपानामप्रका नीच गथा वृक्षादिनापक ४ ॥ कन्याप्रद ४ संशुका नीच
र्जमा प्राप्य संशय ॥ अश्वत्थमर्क पिचू मर्दमर्क द्वयम्यकरी निचकनीति ॥ ना
गाला एक श्रीरुल सफकच पञ्चमप्रवापीन न कनप ० धन ॥ वृक्षादिनाप ० ॥ ॥
नवती रुक्मूलेषु प्रव ० एतन्मेष ४ ॥ पितृदवतथा सोम्य धान्यकृदं मृ ० ॥

६३

२३

दय ॥ अन्तर्द्वन्द्व ॥ ॥ हस्तादिनादिति स्वाति न वति शुवत्तय ॥ मित्रल (गुणो
वान् वीज कार्यं शुक्रया ॥ माधवद्वन्द्व (वापि सर्व वीजा निसेग्रह ॥ अथ यत्राप
यदोदचाणापनिष्पद्यत ॥ वीजधानी ॥ ॥ याम्यदिति मघा अकं शुक्रनसूचका
नयत ॥ मीनल (गुणोत्तमं निधनं कृतवर्जित ॥ अन्यं काटनिक्रिपव्यो गेर्गवदति
सर्वदा ॥ अन्यस्मापने ॥ ॥ त्रिषूत्रनसूनाहिष्मं धनिष्ठावत् (अथ ॥ ३०० सूत्रं लूवि
रूपं अन्यानि ४ कुमनेव (४ ॥ दक्षिणदिग्मुखगमने स्याद (रिनवासुनानीय ॥ व्ययमपि
अस्य रुलानी नव (अवधसमनकुर्यात् ॥ अन्यानि ४ कुमने ॥ ॥ मलव्यपाहनस्नानं यदी
दिकं च यत्नवत् ॥ नेव कुर्यात्तु यादव्यं (रतीयायीति (अथ ॥ प्रतिपद्यनपश्य ४ स्या

नाम

२३

तृतीयायामपन्निग ४॥ दधाम्यामधमस्नानं सर्वह किययाद ४॥ पूज्यन्मनिसंका
नोऽर्धजन्मदिनतथा॥ नियस्तानेव कर्तव्यं तिथिदद्यानविद्यत ॥ ००॥ तिस्रस्वस्नान॥
॥ स्नानकर्तव्यं कियानार्थं ॥ शुद्धात् तिथिदद्यात् ॥ सफ्जन्मरुवपूजा विधवा दूरगम
ध्रुव ॥ दधतिष्ठति तिथ्याय स्नानवस्थापूवस्थादयिजनिता रागम ॥ अथ वि ॥ अथ दू ४ रवे ॥ ४
धमिचरुपनानी सफ्जन्मापितासां विगलितवृचकूर ४ कृमि कृमृस्कलार ४ ॥ हताचुत
तिथ्यास्नानेनानीनीयदिजायत ॥ पूज्यत्स्वीमिनेतु आत्मना सर्वसंस्कृत ॥ ००॥ तिम्नी
अथ तिथ्यास्नानी ॥ ॥ हस्तपृष्ठत्रयवस्थायाभ्युद्यानलविष्णुवस्था ४ मघादान् ॥ अथैवद
४ हस्नानमूर्ध्नि ॥ पूर्वात्रयमघायाभ्यपाचनीयवत् ॥ अथ ॥ सोमादित्येनेवान् स्ना

६५
२४

ब्रवीन्नागसूक्तिर्दं॥ चनादयसोनकूजा किंवा ननिकाति (थे) चन्द्रवले विहीन।
स्नानं च कुर्यात्स्वस्नाना हि दीप्तिं विपत्तये प्रत्य विनेधनेषु॥ व्यतिपात विद्विदिव
सुनवित्स्मिन् नन्दनानीना॥ स्नानायाद्भदमूका वावुलमूका वाधुराणि नि॥ ना
गस्नानं॥ ॥ सफस्यानस्य (गले) लेनवम्यां पुनिपदि (थे)॥ चतुर्दशमिधम्यां स
ध्या (थे) ववि (गले) ४॥ चतुर्दशमिधम्यां वेव जोर्मास्यर्कसंक्रमः॥ तेलस्य (गले)
कूर्वीत सुगवन्धुधनक्रयात्॥ तेलस्य (गले) निषधः॥ ॥ तेलस्य (गले) तापः॥ सा
म (गले) कुरु मृतिः॥ वू (धधने) गुना हानिः॥ गुकुरु खेनो सुखं॥ तेलस्य (गले) नवान्द

नाम
२४

ली॥ ॥ प्रतिपद्वर्षाष्टीयूनवर्ष्मिन्निविवा सत्र॥ दत्तानां काष्ठसंयागाद्दद्यात्सकर्म
कूल॥ अगुत्पादककाष्ठप्रयत्नैस्तवर्षीतथा॥ मृत्तिकाहस्तैर्वैवर्ष्यं गमसि
कृत्वा॥ दत्तभावनसिद्धि॥ ॥ पोष्णाद्वयवादि तिरुद्वयच हस्तुयच शुवर्णयच॥ मंग
चमूलचमृगचहस्तैरेष्यकर्मप्रवदन्ति सक्तं॥ हस्तुयविष्णुविष्णुयपोष्ण
यतथा॥ मित्रुयगुप्तोवक्तोरेष्यकर्म (एषुहं॥ त्रिन्दुगुप्तुकर्तुदिनतन्मृ
रुगुह॥ तेष्यकर्म (एषाकर्तुमन्दानवासन॥ पूष्यहस्तुयथेष्य (एषुहं
हस्तुय॥ शुक्लान्यतानिष्कालिपानवानो विप्रचन॥ ०० तिरुद्वयकर्म॥
सोम्यान्नाधवसुविष्णुकर्तुनिष्कालिपानवानो विप्रचन॥ ०० तिरुद्वयकर्म॥

६४ क

२५

मृगलिदृश्यममथ तोलित एन जीवत एन च तीजयमति नोका ॥ नोकादि हिल्य क्रियानम्रं
॥ ॥ ॥ अमु घटित अमु निहृत्तिकाथे विभरवक ॥ लोमवान ए संयूक संयममडयदायक
॥ अमु कर्म ॥ ॥ पूष्या कीदिति चिगामि उकमला अका रुना नवती स्वाय भिन्य ०० मास्त
थ गत लिखा वान कीरो मार्क ऊ ॥ कूर की उगत गृह मृग प तो चन्द्र पु र वी श्वर सन्नाहा
दिक रव प्र क न कुनिका अर्थ नि पानी हिती ॥ सन्नाहा दि अ न नी ॥ ॥ नवेक पंचक सिद्धि
साध्य दष्टा युग्म के ॥ जिस फे का द (अ) सिद्धि चत्वार द्वाद (अ) निपू ॥ सिद्धि ० सिद्धि ति काल
न साध्य सिद्धि ति वान वा ॥ सु सिद्धि रक्त ए अ द वि अलि मूल विन ० नि ॥ अथ विदित उ नम स
मय नृप नृ दि ० प्र चक्र राया ॥ आरु ता तु व संव ज न रु ल स्यात् क चि त्किं चित् ॥ सु म धू न रु

नाम
२५

लपुष्पक्रीनवृक्षावृतापीचनदागतिमूखाया ॥ अहं नववर्षा ॥ अलिलकसूत्रवर्षाष्टक
 ताहदमूर्ध्याग्रहगतिस्त्रिसादनैष्टकतन्त्र ॥ सुनवदातलोष्टाशुष्टहस्ताकर्मणि ॥
 अवधवदननासगुचनन्त्रादिरूप ॥ ४॥ स्थितिपदिकना ॥ अंगशुक्लधौककाश्रिग
 मशुहमदानुव्याहन्तासिक्कन ॥ कर्मनाभिमतकर्मविलग्नतत्पतिउदय ॥ अयदिवा
 सु ॥ ४॥ आयकर्मत्रिपूकर्मगतार्थोक्तसंकयमवेहितदानी ॥ ४॥ दमपत्रिसम्वयदा
 ॥ सुहिबूकवाविशयसुधपिगागु ॥ अिनसादयमतिथनाभिर्कयकत्ताव्यूदयत ॥
 ४॥ कवर्ग ॥ कनातिनाभिर्जमनीदलेचचलविल ॥ अशुहद्विष्टक ॥ स्थिनादुपस्था
 ॥ मनेनयागु ४॥ अशुहद्विष्टक ॥ स्थिनादुपस्था

६. कु

२६

निनी कितव ॥ प्रयाति यद्यप्यवधस्तदा नी निवर्तत भक्तुना हिरत ॥ मनानमाहयदिष्ट
कृतस्यात माझलवस्तुतिदधिवस्तु ॥ यथादनात्सु कतिचप्रहसंतदादि ॥ दक्षिणयस्त
वति ॥ पूर्वाक्षुवमिष्टुले न्नगमनीकुने न्नसर्वदिन प्राकनापनवासनपिन घृणिमैतुननाल
मस्तु ॥ उग्रश्वेन्नचमव्यनाशसमयनष्टनिगमकचने ॥ सर्वथचकनेन्दवद्यहनिरे ॥ कालव
याभुह ॥ महीहतीयागवधस्तुलादयद्विजमनामृकगु ॥ लेकुजायत ॥ सतस्तुनाद ॥ ग
कप्रहावताजनस्य ॥ यस्य मूर्ध्ना कित ॥ ॥ उरुनाहस्तुतिर्यचद्वचतुष्टमघाष्टिह
निदहना ॥ नविकविकृजुनवानाहवकिष्टुहदाधनवद ॥ हनीस्तुफतथापोषचैतुप
कसितनन ॥ गणिसोम्यगानेवीपिदि ॥ य ॥ धानेवहास्यत ॥ धनवद ॥ ॥ अष्टिनिमैतुन

नाम
२६

वयं मृगमूला पुनर्वसु ४॥ प्रथमस्कान्तथा अष्टा प्रस्कान्त (अष्टउच्यते ॥ उक्तमया ॥ ॥
नाहिनातिनिपूर्वाति स्वाति विज्ञातवानूर्ण। अवधवधनिष्ठाव प्रस्कान्तमयसु ४ सुत ॥ म
यमया ॥ ॥ विष्णुवाचा रुनाली सिमघाडा हनती तथा ॥ अ (अथा कर्तिका चैव प्रस्का
नमनर्णिकुर्वी ॥ अधमया ॥ ॥ अम्बिनी नाहिनी मूल मूला नक्षत्रमवच । हस्तस्याथ न
नाक्षत्र गृहान्मृषमस्यत ॥ वक्रादिपञ्चककनक्षत्रयपिष्टपोष मिश्रयान्नहनिद्व
यवाजिह्व ॥ उच्चारवनी शुभमिनादिवसं शुभानां प्रमस्तिर्नाम रवन्मृगहादिक
र्यात ॥ गृहान्मृ विविध ॥ ॥ वातादिति द्वयकना रुनपोष्युग्ममूल नक्षत्रमृगहादिक
यपिष्टरुषू ॥ सप्तारुवर्कसहितश्रुति (थेव निक्कमन्वानवो न विहच गृहप्रवण ४॥ गृहप्र

द. क्र.
२७

व. ४१॥ ॥ न विधनमघमिदं न वती पृथ्वी युक्त हिमकन हनिष्य कुबुद्ध विनाशक न भू ॥ हनिष्य
कलमलि मुीरु तीयादयः पुरादिन सितपके लग्नरा गयुहय ॥ वक्र हयै हवति तु न
दिनर्थना ॥ ४ सो न नथ किति सतस्य च वक्र पात ॥ प्रासाद पून स्रन की क्रिया सुधर्मार्थ
वो कित पुह्य हा नी ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॥ बूलिकर्म विष्णु ययुह क्रिका वाह न उच्य ॥ न हि
चतथा पृथ्वी गमिष्य सोमरा स्त नो ॥ बूलिकर्म ४॥ ॥ मयानं ह मघा द्रा च स्वाय (न स्याति
पूर्वक । ह न धी ग क्र से युक्त वासन कृज सो नया ४॥ मयानम् ४॥ ॥ नाजा रिष का नि नि
न वती च तता रु ना ति व्य ह नि र्गु न च ॥ विना ध नि ष्टा सह ना हि की च वृधा कृ षु कृ यु न वा
सन य ॥ नाजा रिष क ॥ ॥ नृत्या न म् कृ षु र्गु न क ह सु ति व्य र्ग न य च ॥ व स व ध न न ना ध

नाम
२७

ववान् (६) नवतीतथ ॥ नृत्यानम् ४ ॥ ॥ दवंस्कापनप्रव्यनाहिनीकनविशरुनाचाणि
नी ॥ १० ॥ स्तालायननाधवाठावरनिर्घनमिताकर्गुनो ॥ दवंस्कापन ॥ ॥ जीष्पूकनातथाफा
र्यसोम्यचगुनदवती । मेरी (१०) नक्षत्रनक्षत्रपावनैवेन्दुमवच ॥ नेमृतेवेष्ट्वेष्टकातथापूषा
दिदेवती । उगातिष्ठिवया (गच्छुप्रभ) सानिचतुर्दशी ॥ मेरुचिगरुनापूष्याप्रवणानिलवा
सवी ॥ वान् (७) इमघाम्लादीकाकालगुरुसदा ॥ पूर्वमास्यछमीगुक्रान्तथचेवचतुर्दशी
॥ हस्तदीक्षाप्रतिथयसाकशासूक्तिकर्मणि ॥ कार्तिकाचेववेष्टारखीस्वर्लमानविदकि (९)
॥ अयमेविश्रुसंक्रान्तेसन्निताचगुनाजयत् ॥ कश्यपीर्थमिवनाग्रमहागुरुसमागम
बन्धसूर्यापना (गचदीक्षाकन) मूर्ध्म ॥ दीक्षाविधिः ॥ ॥ नाहिणीआश्रापूष्यचधनि

हवत् ॥ तदाश्रकादणीयाश्चाद्वादणीसूत्रमूपाययत् ॥ दणमीउतया ॥ ॥ उकादणीयदानया
उपाय्याद्वादणीतिथिः ॥ उकादणीउतया ॥ ॥ कलायेकादणीयत्पनताद्वादणीहवत् ॥ गुरुक
तुभतैपूव्यगयादध्वनुपानदी ॥ द्वादणीउतया ॥ ॥ विवद्वेकादणीवेवमूपाय्यासीतिथि
स्तथा ॥ द्वादध्वपानदीतुक्विष्णुलोकसगच्छति ॥ उकादणीवाउया ॥ ॥ कलाकाष्टदिवा
दध्वयदिस्यादपनहनिः ॥ द्वादणीद्वादणीहन्तिपर्वसिन्ध्यानदिन ॥ द्वादणीवाउया ॥ ॥
आराकाभैमितपक्रषूमेउध्रवदानवती ॥ द्वादणीवृधवात्रलहनिवासीविधीयत ॥ हनिवा
सनसयया ॥ ॥ पृथिवीयानिपापानिबुद्धरुपासमानिच ॥ अन्नमाप्रियतिहृन्निमंजा
फहनिवासन ॥ हनिवासनसअन्ननयमतवया ॥ ॥ अथमुक्तेदणम्यानुहवहोमदिन

द. कु

२९

यदि ॥ इत्याहसुर्कसंयुक्ता सर्वपापनातिथि ॥ दण्डनालाकसंयमा ॥ ॥ उक्तानुनवमीपा
थंजन्मनापिकनातिय ॥ ॥ सपातिस्नानमक्रुष्टियकिष्ठासियव ॥ अष्टम्यमिकरुक्कनन
वम्यीसमपावर्षी ॥ दण्डम्यापानर्षीकुर्यात्तनवम्यायदिलयत ॥ वेणुशुक्लनवमीनामनवमी
॥ ॥ मन्वदृष्टयदासोत्रिहिरुक्तुनूचन्द्रमा ॥ रास्त्रनप्रवक्ष्यवक्ष्यमहामाघीप्रकीर्तिता
॥ महामाघिया ॥ ॥ मासपक्षयदापक्षमकनरुहुरुहसुक्ते ॥ पूर्वमासिमहामाघीमघाया
चन्द्रमाशुभो ॥ महामाघिया ॥ ॥ ह (पुं) मीमूदयाक्ष्यापिरुह्यासद्वमवच ॥ ॥ भिवान
नसंयुक्ते महामाघीप्रवस्यत ॥ तस्मात्स्नाननदाननवानानस्यसिमाहवत् ॥ वत (पुं)
वमहापूष्यमनकैलरुहुरुहली ॥ महामाघीलाकया ॥ ॥ माससंक्षयदापक्षचन्द्रसं

नाम
२९

पूर्वमष्टुल॥ गुनसंयागि सथाग. तन्महत्वेति (५४ स्मृते) ॥ महाश्वीसन (प्रवृत्ता
नक्रुला स्मृता ॥ तस्यानुजाक्रवीस्त्रानसूर्यग्रह ५४ ताधिक ॥ महाश्वीलाकया ॥
॥ अवलोक्यति पार्त. संगममाघपोषया ४॥ अर्द्धदयित दित्युक्ते सूर्यग्रसे ४॥
ताधिक ॥ अक्रुपोष्मान गन्दा ५॥ गन्धुख्य पीचना ठिका ॥ आद्यष्विमघमूलाना. मनि
वृत्ता ठिका ग्रय ॥ मूलादोपि नृग दुस्या. माहृग दुद्वितीयके ॥ नृतीयधनग दुधुचतुर्थ
धुधुगवह ॥ अष्टादशजननीमाता. द्वितीयजननी पिता. नृतीयजननी पिता. स्वयमा
ताचतुर्थके ॥ ॥ आदित्यहस्ता गुनप्रवृत्तयागः वृक्षनूनादो ५॥ निनाहिनीच ॥ साम
नसोम्यरुगुनवनीच. लोमा ५॥ निचामृग सिद्धियाग ४॥ अमृत सिद्धियाग ४॥ ॥

५. क
३०

आग्निनी सहसूर्य्य ए साम मृग मित्रस्तथा ॥ अ० (लघ्या लोमवान ए वृष हस्त प्रकी
र्तिरौ ॥ अनुनादा यु नार्वा न विष्वद वधु रगर्जव ॥) वानर्य ए नि सैयू की मान धार्य
प्रकीर्तिरौ ॥ आनन्द्याग ॥ ॥ हस्त सूर्य्य चन्द्र माना हि णीषू मूल लोम साम दवा व
धृष्य ॥ पूष्य जीव वेक्रवा रगर्ज वधु पिनु (लो नि ४ सिद्धि या गम्य सफ ४ ॥ सिद्धि या ग
॥ ॥ एत ए रानु ना वेव साम विना न थे वच । कूज म्वा रु ना या टा ध निष्ठा चन्द्र ज
हृज ॥ युन (एव रु न रु लु र्मा रु क रु र्वा विव र्ज्यन् ॥ नव ती सूर्य्य पूष्य ए ज न्म मृग
प्रकीर्ति ना ४ ॥ ग्रहा णी ज न्म मृग रु विवा हने व का न य त ॥ विवा ह पू च वे ध वी या गाय मि
न ए ह व र् ॥ गृह प्रव (लो च दा ह स वा चे व रु नि स्तु ले विद्या न म् रु च म् सर्व त्व कृषी च विरु

नाम
३०

लाहवत् ॥ ग्रहजन्म ॥ ॥ त्यक्तविमनूनाः विष्णुदवचसा मी ॥ अतस्त्रिषमपि रोम वा
ष्पिरुचन्द्रे पूरी ॥ मृगशिरसि च जीव सप्यदवचकुर्क ॥ न विसूत मपि हस्त मृगशिरसि वि
धानी ॥ मृगशिरसि ॥ ॥ कूलिनीसि हया ४ कीट वापय मीन मयथा ४ ॥ गण्डाने पञ्च नाल
स्या घटिका द्वे मिति प्रदी ॥ नागि गण्डाना ॥ ॥ गुरुनिन्दा क्रयाति ॥ सन्धिर्नाडी दयनथा ॥
गण्डाने मृगशिरसि द्वा द्वे मया वा नाहवनादिषू ॥ तिथि गण्डाना ॥ ॥ अकपोक्ता न एवा धर्मि गण्डाना
कापी च नाठिका आश्वि मघ मूलाना मनिष्ठाना ठिका उर्य ॥ नक्र गण्डाना ॥ ॥ तिथि च
वानस्य च यज्ञ सखाया जयादहा सूर्यमिलन कृत सति ॥ समृगशिरसि कर्क च विधानका वि
वर्कनीय ४ उरकर्म सूक्ष्मी ॥ कर्क च याग ४ ॥ ॥ द्वितीयाधन मीनसू चतुर्थी रविकर्म या ४

द.क्र

३९

॥ मसककट्य ॥ ४४ ॥ कन्यामिधुनचाष्टमी ॥ दशमी वृश्चिक सिंह दशमी मृगशीर्ष ॥

॥ एतावन्तिथ्यादयः वक्रयत्सर्वकर्मणि ॥ तिथिदग्ध ॥ ॥ दशमी च मघा दिव्या वि
॥ मखेका दशमी ॥ दशम्यां गनकचात्रा वृधमूल नृतीयक ॥ गतहिचगुनी सखी
द्वितीया नाहिनी ॥ ४५ ॥ सकमी सोनमाषाढा यमदंष्ट्रा प्रकीर्तिता ॥ यमदंष्ट्रा ॥

॥ विष्णुस्वायम्भुवादिभ्यः पूर्वपाठा तु यथा ॥ ५५ ॥ निष्ठाग्रयणे वृधस्य नवती
तुय ॥ नाहिनी च वर्यजीव पूव्य च वर्यरागव ॥ ४६ ॥ उरुना हानुनी चैव गनेर्वा नम
वक्रयत् ॥ प्रवासं मृत्यु व्याधिसिद्धि जनेयाग ॥ ॥ आदिन्यवार्निनिनिनाथयुग्म
हम्यान्मेज ॥ ४७ ॥ वृधनरुमीर्वाजीवा मुनिं शुक्रश्रुतिगनकदिनदिनस्तु मन्दहानी

नाम
३९